मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 16

PGDT-03

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.टी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2020

पी.जी.डी.टी.-03 : व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. अनुवाद में शब्दकोशों के प्रयोग की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 20

अथवा

आशु अनुवाद का अभिप्राय बताते हुए आशु अनुवाद की आन्तरिक प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

P. T. O.

2. (a) निम्नलिखित वाक्यों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : प्रत्येक 2

(i) साहित्य की दुनिया में 1990 के बाद से अस्मितावादी साहित्य के उभार के साथ स्त्री-कविता अपने लिए नई ज़मीन तैयार करती दिखाई पड़ती है।

(ii) इस बार शहर में सौ से भी अधिक स्थानों पर प्रदूषण जाँच केन्द्र स्थापित किए गए हैं।

(iii) मसौदे के मुताबिक सरकारी भूमि पर इमारती लकड़ी पेड़ और कृषि भूमि पर फलदायी पेड़ लगाए जा सकते हैं।

(iv) पानी जीवन की सबसे बुनियादी जरूरतों में से एक है, लेकिन हमारी नदियाँ प्रदूषण के संकट से गुजर रही हैं।

(v) चीन के प्रति एक सन्तुलित दृष्टि बनाने के लिए यह याद रखना आवश्यक है कि चीन सदा एक केन्द्रीय व्यवस्था रहा है।

(b) निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : प्रत्येक 2

(i) In the first part of my chapter, I have provided my conceptualisation of translation and explained why I adopted this theoretical framework.

(ii) Walter Benjamin has challenged the binary (द्वित्व/द्विचर) assumed between the translation strategies of foreighisation and domestication.

(iii) Indian mass media is today considered one of the most vibrant areas of social and economic activity.

(iv) The tentative design of the programme will be finalised after expert committee meeting.

(v) Some to the proposed contents are cultural uniqueness of India, film and literature and project work.

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : प्रत्येक 15

(a) Upto 95% of plastic debris found in the sea is carried by 10 major rivers, including the Ganga, scientists have found. Eight of these are in Asia and two in Africa—areas in which hundreds of millions of people live.

Every year, millions of tonnes of plastic debris end up in the sea—a global environmental problem with unforeseeable ecological consequences. The path taken by

plastic to reach the sea must be elucidated before it will be possible to reduce the volume of plastic input.

Researchers showed that plastic debris is primarily carried into the sea by large rivers. Fish, seabirds or marine mammals mistake the particles for food and consume them. "It is still impossible to foresee the ecological consequences of this. One thing is certain, however, this situation cannot continue," said a foreign expert.

(b) Sunday's final between World No. 4 PV Sindhu and Nozomi Okuhara will be remembered for ages. Lasting an hour and 50 minutes, not only was it the second

longest match in the history of women's singles but was unquestionably one of the greatest badminton matches ever played. But sport is cruel and as they say, there is always a winner and a loser.

PV Sindhu is returning with a silver, her third medal from the world badminton championships after claiming bronzes in 2013 and 2014. For Okuhara, it was a historic gold, the first for Japan in 40 years.

Silver medallist in Rio 2016, Sindhu certainly deserves all the accolades for reaching the world championships final, being only the second Indian to do so after

Saina Nehwal in 2015. But we need to think for a moment—what are we celebrating here ?

When Sindhu 'won' the silver at Rio, it was a unique occasion—an Indian woman had claimed the metal for the first time at Olympics.

(c) A society is a group of people involved in persistent social interaction, or a large social group sharing the same geographical or social territory, typically subject to the same political authority and dominant cultural expectations. Societies are characterized by patterns of relationships (social relations) between individuals who

share a distinctive culture and institutions; a given society may be described as the sum total of such relationships among its constituent of members. In the social sciences, a larger society often evinces stratification or dominance patterns in subgroups.

Since it is collaborative, a society can enable its members to benefit in ways that would not otherwise be possible on an individual basis, both individual and social (common) benefits can thus be distinguished, or in many cases found to overlap. A society can also consist of like-minded people governed by their own

norms and values within a dominant, larger society. This is sometimes referred to as a subculture.

More broadly, and especially within structuralist thought, a society may be illustrated as an economic, social, industrial or cultural intrastructure, made up of, yet distinct from, a varied collection of individuals. In this regard society can mean the objective relationships people have with the material world and with other people, rather than "other people" beyond the individual and their familiar social environment.

(d) Guidelines on Preparation of Self-Learning Material Overview

Self Learning Material is developed with the approach of self-explanatory, self-contained, self-directed, self-motivating and self-evaluating. The major challenge for the Open and Distance Learning system is near absence of the teacher. Therefore, it is very essential to pre-plan each of the activities. The learning material plays a vital role in this system and it includes Self-Learning Material in print and electronic form. A key challenge of Learning Material is ensuring that its writing is to be in a way that is engaging

and which actively involves the learners. Another challenge of learning material is rapidly changing technology and deploying traditional teaching-learning methods through these technologies. Therefore, it is necessary to have the proper planning prior to development of the learning material.

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 15

(a) किसी भी संगठन के सतत् विकास के लिए उसके कर्मचारियों द्वारा बदलते परिवेश को आत्मसात् करना और इस परिवर्तन के अनुसार खुद को बदलना नितांत आवश्यक होता है। संगठन के

अस्तित्व का दारोमदार उसके कर्मचारियों की कार्यकुशलता पर ही निर्भर करता है। प्रत्येक संगठन इस चुनौती का सामना करने और अपने समयानुसार अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षित करता है। भारतीय स्टेट बैंक समय के साथ चलने वाला बैंक है। अपने 210 वर्षों के इतिहास में इसने अपनी जिजीविषा को बार-बार साबित किया है। बैंक ने अपने कर्मचारियों को बैंकिंग के बदलते आयामों के अनुसार प्रशिक्षित करने का कार्य तो अपने प्रारंभिक दिनों से ही शुरू कर दिया था, परन्तु सुदृढ़ एवं वृहद प्रशिक्षण प्रणाली की शुरूआत 26 अप्रैल, 1954 को (इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया) कोलकाता में प्रथम गैर-आवासीय

प्रशिक्षण स्कूल की स्थापना के साथ हुई। 2 दिसम्बर, 1961 को हैदराबाद में स्टाफ प्रशिक्षण कॉलेज (अब स्टेट बैंक स्टाफ कॉलेज) की स्थापना के साथ इसने एक नए युग में प्रवेश किया। 5 राष्ट्रीय स्तर के शीर्ष प्रशिक्षण संस्थानों एवं देश भर में स्थापित 47 ज्ञानार्जन केन्द्रों के माध्यम से बैंक निरंतर अपने कर्मियों की दक्षता बढ़ाने में लगा हुआ है। बैंक को एक ज्ञानार्जन संस्थान के तौर पर रूपांतरित करने एवं सम्पूर्ण प्रशिक्षण प्रणाली को एकीकृत नियंत्रण में लाने के उद्देश्य से 5 अप्रैल, 2010 को कार्यनीतिक (Strategic) प्रशिक्षण इकाई (एसटीयू) की शुरूआत की गई। बैंक की पूरी प्रशिक्षण प्रणाली

कार्यनीतिक प्रशिक्षण इकाई के सर्वोपरि पर्यवेक्षण एवं दिशानिर्देशन में कार्य करती है। एसटीयू कॉरपोरेट केन्द्र, मुम्बई में स्थित है और इसके प्रधान मुख्य महाप्रबंधक स्तर के अधिकारी हैं। बैंक का प्रशिक्षण तंत्र देश के बैंकिंग उद्योग के लिए एक मानक है।

(b) हाल ही में 08 मार्च को सरकारी कार्यालयों सहित अन्य तमाम संस्थाओं में 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' बड़े जोर-शोर से मनाया गया। इन कार्यक्रमों के माध्यम से महिला वर्ग का उभरता हुआ चेहरा, उनका विकसित रूप तथा महत्वाकांक्षी छवि उजागर हुई। उनके सशक्तिकरण के लिए बहुत सारे सुझाव व प्रस्ताव भी सामने आए।

महिला सशक्तीकरण एक ऐसी चुनौती है, जिसका हल खुद महिलाओं को निकालना होगा। देखा जाए तो महिला होना ही अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। हर महिला का इस सच्चाई से रूबरू होना अति आवश्यक है। महिला सशक्तीकरण के अनेक पहलू हैं। इस विषय पर विचार करते समय हमें उनकी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, वैचारिक और नैतिक स्थितियों को समझना होगा।

'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' वह महत्त्वपूर्ण अवसर है, जिसके आलोक में पूरे देश की महिलाओं के सशक्तीकरण के बारे में चिंतन होना जरूरी है, क्योंकि इस दिवस की उत्पत्ति महिलाओं के साथ किए जाने वाले सभी प्रकार के भेदभाव दूर करने

से ही सम्बन्धित रही है, जब वर्ष 1979 में संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा में इस आशय का प्रस्ताव रखा गया। महिलाओं को लेकर किए जाने वाले भेदभाव को दूर करने और अपनी न्याय व्यवस्था में समानता के इस तत्व को सम्मिलित करने की बाध्यता प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने वाले हर देश की थी।